International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

धातु,लकड़ी व पत्थर का एकीकरण : एक सौंदर्य अनुभूति (चिन्मय के मूर्तिशिल्पो के संदर्भ में

Mr. Perdeep Kumar[1], Prof. Dr. Sanjeev Kumar[2]

[1]Jr. Artist, Sculpture, College of Art New Delhi
[2]Professor, Sculpture, College of Art New Delhi

लेख सार

ताँबा मनुष्य की सबसे पहले की परिचित धातुओं में से एक है। विश्व में सबसे पुरानी ताम्र-वस्तुओं में उपलब्ध है ताप-अली-कोश (मध्य- एशिया) नामक स्थान का ताँबे का मनका (Bead), जो 6500 ईसवी पूर्व का है। इसके व अन्य साक्ष्यों के आधार पर ताँबे का इतिहास कम से कम नौ हजार वर्ष पुराना सिद्ध होता है [1]। भारतीय वेदों में धातु से संबंधित वस्तुओं के साक्ष्य मिले हैं ऋग्वेद में संस्कृत शब्द अयस् का उल्लेख हुआ है जिसका अर्थ है धातु।

लकड़ी तो सृष्टि की उत्पत्ति से ही विद्यमान् है जिसका उपयोग आदिकाल से ही अनेक रूपों में शुरू हुआ जैसे भवन निर्माण, हथियार निर्माण, मंदिर निर्माण इत्यादि। तत्पश्चात् मनुष्य ने धातु और लकड़ी का एक साथ उपयोग मन्दिर, भवन, बर्तन, हथियार इत्यादि के निर्माण में किया जोकि अत्यंत प्रभावित करता है उदाहरण के तौर पर हमारे देश के मंदिर है जो कि पूरे भारत में अलग अलग प्रांत राज्य तालुकों में अलग अलग शैली में बने हुए हैं और उसमें धातु, लकड़ी एवं पत्थर का बहुत ही सुंदर तरीक़े से इस्तेमाल किया गया है उदाहरण के तौर पर ज़्यादातर भारतीय मंदिर चाहे वो पत्थर से बने हो या फिर लकड़ी से उन में अलग अलग रूप में धातु का इस्तेमाल हुआ है जैसे कि शिखर, द्वार, मुख्य मूर्ति इत्यादि। ओर जिस प्रकार संस्कृति का विकास हुआ तो मूर्ति शिल्पों में भी धातु और लकड़ी का एक साथ उपयोग शुरू हुआ और वह अभी तक चला आ रहा है जिसमें कलाकारों ने विभिन्न प्रकार के प्रयोग किए जिससे एक अलग प्रकार की सौन्दर्य अनुभूति होती है।

- कला और वास्तुकला में धातु, लकड़ी और पत्थर के एकीकरण ने पूरे इतिहास में विभिन्न संस्कृतियों और सभ्यताओं के विकास को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
- धातु, लकड़ी और पत्थर का उपयोग अलग-अलग अथवा एक साथ आदि काल से होता आ रहा है। जिसका स्पष्ट उदाहरण भारतीय मन्दिरों में देखने को मिलता है चाहे वो मंदिर में स्थापित मूर्ति या स्थापत्य। मंदिर निर्माण में पत्थर या लड़की के टुकड़ों को जोड़ने में धातु का इस्तेमाल हुआ है।

[1] डॉ० गोपाल शंकर उपाध्याय एवं डॉ० अविनाश चंद्र वाजपेयी, धातुओं का इतिहास, 1997, अध्याय 1, पृष्ठ सं० 1

- उसी प्रकार समकालीन मूर्ति कला में अनेक कलाकारों ने इन्हीं दो या तीन माध्यमों को लेकर काफी मूर्ति शिल्पों का निर्माण किया है।
- धातु, लकड़ी और पत्थर मूर्तिकला अभ्यास के अभिन्न अंग बने हुए हैं, जो रचनात्मक अभिव्यक्ति और अन्वेषण के लिए अनंत संभावनाएं प्रदान करते हैं।

सूचक शब्द : धातु, लकड़ी, पत्थर, शिल्प, चिन्मय, एकीकरण, सौंदर्य

परिचय

भारत में मूर्तिकला की परंपरा उतनी ही प्राचीन है जितनी इसकी सभ्यता, प्रारंभिक मूर्तिकला प्रथाओं के प्रमाण प्रागैतिहासिक युग से मिलते हैं। सहस्राब्दियों से, भारतीय मूर्तिकारों ने धार्मिक ग्रंथों, पौराणिक कथाओं, ऐतिहासिक घटनाओं और दैनिक जिंदगी सहित असंख्य स्रोतों से प्रेरणा ली है। परिणाम स्वरूप मूर्तिकला उत्कृष्ट कृतियों का एक समृद्ध और विविध संग्रह है जो भूमि के लोकाचार को दर्शाता है।

सटीकता के साथ ढाली और गढ़ी गई धातु की मूर्तियां, शिल्प कौशल और कलात्मक कुशलता का एक उल्लेखनीय स्तर प्रदर्शित करती हैं। चोल काल की प्रतिष्ठित कांस्य मूर्तियों से लेकर समकालीन कारीगरों की जटिल विस्तृत पीतल की मूर्तियों तक।भारत में धातु की मूर्तियां,शैलियों और तकनीकों की एक विस्तृत श्रृंखला क रूप में दिखाई देती हैं। ये मूर्तियां अक्सर दिव्य प्राणियों, पौराणिक आख्यानों और ऐतिहासिक घटनाओं को दर्शाती हैं, जो पूजा और कलात्मक प्रशंसा की वस्तु के रूप में काम करती हैं।

सावधानीपूर्वक देखभाल और बारीकियों पर ध्यान देकर बनायी गई लकड़ी की मूर्तियां एक नर्म और जैविक आकर्षण का अनुभव कराती हैं जो इस माध्यम के लिए अद्वितीय है। प्राचीन मंदिरों के अलंकृत द्वारों से लेकर पारंपरिक घरों के जटिल नक्काशीदार पैनलों तक, भारत में लकड़ी की मूर्तियां अपने रचनाकारों के कौशल और सरलता का प्रमाण देती हैं। राजस्थान, गुजरात और केरल जैसे विभिन्न क्षेत्रों की लकड़ी पर नक्काशी की परंपरा का अपना विशिष्ट सौंदर्य और सांस्कृतिक महत्व है, जो भारतीय कला की समृद्ध विरासत में योगदान देता है।

स्थायी चट्टान से तराशी गई पत्थर की मूर्तियां, एक कालातीत सुंदरता और स्मारकीय उपस्थिति रखती हैं जो कल्पना को मंत्रमुग्ध कर देती हैं। खजुराहो और एलोरा के राजसी मंदिर परिसरों से लेकर सारनाथ और सांची की शांत बुद्ध मूर्तियों तक, भारत में पत्थर की मूर्तियां बीते युग की आध्यात्मिक आकांक्षाओं और कलात्मक उपलब्धियों का प्रतीक हैं। इन मूर्तियों का जटिल विवरण और वास्तुशिल्प वैभव इन्हें बनाने वाले कारीगरों के कौशल और समर्पण का प्रमाण है।

भारत में धातु, लकड़ी और पत्थर की मूर्तियों का महत्व उनकी सौंदर्य अपील से कहीं अधिक है। ये मूर्तियां सांस्कृतिक स्मृति के भंडार के रूप में काम करती हैं, उन समाजों की मान्यताओं, मूल्यों और आकांक्षाओं को मूर्त रूप देती हैं जिन्होंने इन्हें

बनाया है। वे धार्मिक भक्ति और आध्यात्मिक चिंतन की वस्तु भी हैं, जो अनुष्ठानों, समारोहों और तीर्थयात्राओं के केंद्र बिंदु के रूप में कार्य करते हैं।

इस शोध पत्र में, हम भारत में धातु, लकड़ी और पत्थर का मूर्तियों में एकीकरण से भाव अभिव्यक्ति ।उनके ऐतिहासिक विकास, कलात्मक तकनीकों, सांस्कृतिक महत्व और समकालीन प्रासंगिकता की खोज करेंगे। अंतः विषय विश्लेषण और केस अध्ययन के माध्यम से, हम कला के इन कालातीत कार्यों की जटिलताओं को उजागर करने, उनकी स्थायी विरासत और आधुनिक दुनिया में स्थायी प्रासंगिकता पर प्रकाश डालने का प्रयास करेंगे।

उदाहरण के तौर पर भारतीय मंदिरों में किस प्रकार विभिन्न माध्यमों का एक साथ उपयोग पौराणिक समय से लेकर वर्तमान समय तक हो रहा है।

मैंने तीन समकालीन मूर्तिकारो को अपने शोध पत्र में शामिल किया है जिसमें मैंने दो मूर्तिकारो का संक्षिपत में उल्लेख किया है तथा तीसरे मूर्तिकार और उनके मूर्ति शिल्पों का विस्तृत विवरण किया है।

पद्मश्री राजेंद्र टिक्कू

जिनका जन्म जम्मू-कश्मीर में हुआ ओर उन्होंने वही से अपनी कला शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने दो या तीन माध्यमों को लेकर काफ़ी काम किया है, जो कि अत्यंत प्रभावित करता है ।

सीतिकान्त पटनायक

दुसरे ऐसे कलाकार है जिन्होंने इसी तकनीक का उपयोग किया है क्योंकि उनका जन्म उडीसा राज्य में हुआ है ओर वहा मन्दिरों में जिस प्रकार धातु, लकड़ी ओर पत्थर का इस्तेमाल हुआ है उसका प्रभाव उनके काम मे देखा जा सकता है।उन्होंने पत्थर के साथ धातु का प्रयोग किया है जिसको देखने से अलग तरह की अनुभूति होती है ।

चिन्मय कर्माकर

इनका जनम 1966 में पश्चिम बंगाल में हुआ । इन्होंने बी०वी०ए० (मूर्तिकला) कॉलेज ऑफ आर्ट एंड क्राफ्ट, कलकत्ता, 1990 में और कॉलेज ऑफ आर्ट, नई दिल्ली से एम०एफ०ए० (मूर्तिकला), 1993 में किया है। वह अपने लकड़ी और धातु के मूर्ति शिल्पों में अमूर्तता की सुंदरता का प्रयोग करते हैं।

चिन्मय ने राज्य कला अकादमी की वार्षिक प्रदर्शनी, ललित कला अकादमी के राष्ट्रीय सहित विभिन्न व्यक्तिगत और समूह प्रदर्शनियों में भाग लिया है।

इंडियन सोसाइटी ऑफ ओरिएंटल आर्ट, कलकत्ता वार्षिक प्रदर्शनी, ललित कला अकादमी (कलकत्ता), वदेहरा आर्ट गैलरी, बिड़ला अकादमी, एआईएफएसीएस, पश्चिम बंगाल राज्य ललित कला अकादमी, गगनेंद्र आर्ट गैलरी, जहांगीर आर्ट गैलरी आदि ।

चिन्मय को किंग सीरीज़, द जेट्टी सीरीज़, टारगेट सीरीज़ और विलेज सीरीज़ का श्रेय जाता है । उनके राजा राजसी और भव्य दिखते हैं। उनके काम का शीर्षक 'बुद्ध: किंग ऑफ लव' अर्ध अमूर्तता की विजय का प्रतिनिधित्व करता है। चिन्मय ने अपनी 'टारगेट' श्रृंखला में समुद्री स्थलों के माध्यम से एक दार्शनिक यात्रा की है।अपनी स्पाइरल जेट्टी में उन्होंने गति और आराम के बीच संतुलन बनाने का प्रयास किया है। मानव रूप की केंद्रीय धुरी के विरुद्ध सर्पिल गति पर काम किया गया है। यहां सर्पिल ऊर्जा और स्थान का प्रतिनिधित्व करता है। जेट्टी विश्राम का प्रतिनिधित्व करती है।

द स्कूल (2015)

इस मूर्ति शिल्प का शीर्षक " द स्कूल" है जिसमें कलाकार ने पानी के अंदर जीवन को दिखाया है उन्होंने इस मूर्ति शिल्प में दो माध्यमों का प्रयोग किया है गोलाकार लकड़ी जिसके किनारों पर इस प्रकार टैक्स्चर दिया गया है मानो समुद्र की लहरें किनारों पर टकरा रही हो तथा मध्य में 2 बड़ी मछली और अन्य छोटी मछलियां कांस्य में बनायी गई है जो कि अपने आप में एक अलग प्रकार की सौंदर्य अनुभूति प्रदान करती है।

प्रिडेटोरियल (2012)

इस मूर्ति शिल्प में एक अलग प्रकार का प्रयोग किया गया है इसमें लकड़ी को एक गोलाकार रुप में लेकर एक स्थान पर नब्बे डिग्री में कट किया गया है और वहां पर एक बड़े पक्षी तथा कुछ छोटे पक्षियों को दिखाया गया है जो कि बड़े शांत रूप में बैठे हुए दिखते हैं जिन्हें देखकर ऐसा लगता है जैसे कि वे इंतज़ार कर रहे हैं मछलियों के पानी के ऊपर कि सतह पर आने का। इसमें एक बड़ी मछली अपने झुंड के साथ दिखाई गई है।

कोइग्ज़िस्टन्स (2015)

इस मूर्ति शिल्प में चिन्मय ने एक लकड़ी का टुकड़ा लेकर उसको एक आकार दिया तथा उसके ऊपरी भाग में घोड़े का सिर तथा पीठ पर पक्षियों को बनाया है घोड़े के आगे वाले पैर उन्होंने लकड़ी से सांकेतिक रूप में दिखाए है तथा पीछे वाले पैर कांस्य में बनाए हैं इस पूरे मूर्तिशिल्प ने चिन्मय ने 2 माध्यमों का इस्तेमाल किया है 1 कांस्य दूसरा लकड़ी और दोनों का एकीकरण पूर्ण रूप से उद्देश्य को पूरा करता है जोकि वो कहना चाहते हैं इस पूरे मूर्ति शिल्प में एक बार भी यह महसूस नहीं होता कि कलाकार ने ज़बरदस्ती 2 माध्यमों को जोड़ा है बल्कि ऐसा लगता है जैसे दोनों एक दूसरे के पूरक हो।

बुद्धा-।। (2016)

यह मूर्ति शिल्प महात्मा बुद्ध की जीवन यात्रा के ऊपर आधारित है इसमें चिन्मय ने पूर्ण चंद्रमा को दिखाया है जो की लकड़ी का एक गोलाकार रूप है तथा उसमें बोधिवृक्ष को सांकेतिक रूप पत्तियाँ बना कर दिखाया है बुद्ध को मध्य मे ध्यान मुद्रा में दिखाया है और चारों तरफ़ गोलाकार टैक्स्चर बनाया है जो कि अत्यंत प्रभावित करता है।

कुछ समय पूर्व जब कोरोनावायरस आया था उस समय किसी के पास उसका कोई जवाब नहीं था कोरोनावायरस तो चला गया और दुनिया भी शांत हो गई वह समय हमें सिखा गया के जीने के लिए जूझना और शांत रहना कितना ज़रूरी है हमें कल क्या करना है क्या नहीं सिखाकर गया है।

इस मूर्ति शिल्प में दुनिया गोल दिखाई गई है अर्थात जहाँ से शुरू होती है वहीं पर ख़त्म हो जाती है और आने जाने के बीच में हम सिर्फ़ अपना फ़र्ज़ निभाते हैं।

यह टारगेट सीरीज़ का एक मूर्तिशिल्प है इसमें बीच में एक बिल्ली को बैठे हुए दिखाया गया है जो कि मछली खाने का सपना देख रही है और वहीं पर किंगफिशर भी बैठे हुए दिखाए गए हैं सबका अपना अपना मक़सद है।

चिन्मय ने किंग सीरीज़ के भी काफ़ी मूर्तिशिल्प बनाये हैं इसमें उन्होंने अलग अलग भाव मुद्राओं आदि का चित्रण बड़ी ख़ूबी के साथ किया है इन मूर्ति शिल्पो में उन्होंने कांस्य और लकड़ी का प्रयोग बड़ी सुंदरता के साथ किया है जो कि एक सुखद अनुभूति प्रदान करता है।

अनुसंधान के उद्देश्य

समकालीन मूर्तिकला में धातु-लकड़ी के एकीकरण का महत्व कलाकारों को कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए एक समृद्ध और बहुमुखी सतह प्रदान करता है । साथ ही इसमें सम्मोहक और वैचारिक रूप से आकर्षक कलाकृतियाँ भी बनायी जा सकती है । यहां कई कारण दिए गए हैं कि यह एकीकरण क्यों महत्वपूर्ण है :

- सौंदर्यात्मक कंट्रास्ट और सद्भाव : धातु और लकड़ी का संयोजन कलाकारों को विपरीत बनावट, रंग और दृश्य गुणों को एक साथ दिखाने की क्षमता देता है जिसके परिणामस्वरूप गतिशील और दृष्टि से उत्तेजक मूर्तियां बनती हैं। लकड़ी का प्राकृतिक स्वरूप और धातु के कृत्रिम स्वरूप के बीच परस्पर संतुलन और सामंजस्य की भावना पैदा होती है जो कलाकृति की समग्र सौंदर्य अपील को बढ़ाता है ।
- बहुमुखी प्रतिभा और लचीलापन : धातु-लकड़ी एकीकरण कलाकारों को रचनात्मक संभावनाओं और तकनीकों की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करता है। विभिन्न प्रकार की लकड़ी और धातुओं के साथ-साथ वेल्डिंग, नक्काशी, फोर्जिंग और कास्टिंग जैसी विभिन्न निर्माण विधियों के साथ प्रयोग कर सकते हैं। यह बहुमुखी प्रतिभा समकालीन मूर्तिकला में विविध रूपों, शैलियों और वैचारिक विषयों की खोज की अनुमति देती है।
- संरचनात्मक अखंडता और स्थायित्व : धातु और लकड़ी का संयोजन मूर्तियों की संरचनात्मक अखंडता और स्थायित्व को बढ़ा सकता है, खासकर जब बड़े पैमाने पर या बाहरी स्थापनाओं से निपटते समय। धातु के घटक समर्थन और स्थिरता प्रदान कर सकते हैं, जबकि लकड़ी गर्मी और चरित्र जोड़ती है। यह एकीकरण कलाकारों को मजबूत और लंबे समय तक चलने वाली कलाकृतियाँ बनाने की अनुमति देता है जो विभिन्न पर्यावरणीय परिस्थितियों का सामना कर सकती हैं।

- प्रतीकवाद और वैचारिक गहराई : मूर्तिकला में धातु और लकड़ी को एकीकृत करने का विकल्प प्रतीकात्मक और रूपक अर्थ ले सकता है, जिससे कलाकृति में गहराई और जटिलता की परतें जुड़ जाती हैं। उदाहरण के लिए, प्राकृतिक और औद्योगिक सामग्रियों का मेल, जुड़ाव, परिवर्तन, या प्रकृति और प्रौद्योगिकी के बीच संबंध के विषयों को जन्म दे सकता है। कलाकार इस एकीकरण का उपयोग गहन वैचारिक विचारों को व्यक्त करने और दर्शकों को बौद्धिक और भावनात्मक स्तर पर संलग्न करने के लिए कर सकते हैं।
- नवाचार और समकालीन प्रासंगिकता : धातु-लकड़ी का एकीकरण नवाचार और प्रयोग की भावना को दर्शाता है जो समकालीन कला अभ्यास को परिभाषित करता है। पारंपरिक सामग्रियों और तकनीकों की सीमाओं को आगे बढ़ाकर, कलाकार मूर्तिकला सौंदर्यशास्त्र और प्रवचन के विकास में योगदान करते हैं। यह एकीकरण समकालीन चिंताओं जैसे स्थिरता, शिल्प कौशल और कला और डिजाइन के प्रतिच्छेदन के साथ भी प्रतिध्वनित होता है।

निष्कर्ष

1. प्रमुख निष्कर्षों और अंतर्दृष्टियों का संश्लेषण
2. चिन्मय की मूर्तियों में धातु-लकड़ी के एकीकरण से सौंदर्य अनुभव पर विचार
3. समकालीन मूर्तिकला में भविष्य के अनुसंधान और अभ्यास के लिए निहितार्थ
4. दो या तीन माध्यमों के प्रयोग से भाव अभिव्यक्ति में बदलाव

कुल मिलाकर, समकालीन मूर्तिकला में धातु और लकड़ी का एकीकरण कलाकारों को एक बहुमुखी और अभिव्यंजक माध्यम प्रदान करता है जिसके माध्यम से विविध विषयों का पता लगाया जा सकता है, कलात्मक परंपराओं को चुनौती दी जा सकती है, और प्रभावशाली और विचारोत्तेजक कलाकृतियाँ बनाई जा सकती हैं जो दर्शकों को पसंद आती हैं।

शोध तकनीक

कला जगत में प्रागैतिहासिक काल से लेकर अब तक कला में इस अभिव्यक्ति के विषय में काफ़ी लिखा गया है परंतु यह अभिव्यक्ति क्यों हुई इस विषय पर कोई संतोषजनक कार्य नहीं हुआ। इसी विषय पर मैंने शोध कार्य करने का प्रयास किया और अपना शोध पत्र लिखा है पौराणिक तथ्यों का अवलोकन करके इसे समझने का प्रयास किया है जैसा कि मेरा विषय है धातु,लकड़ी एवं पत्थर के एकीकरण से सौंदर्य अनुभूति,का विस्तृत वर्णन करना।समकालीन कलाकारों से एकत्रित जानकारी तथा उसका अवलोकन।कलाकारों से साक्षात्कार कर उनसे इस विषय एवं माध्यमों के प्रयोग एवं विधि के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त करना अथवा उन्होंने किस प्रकार अपने भावों को अपने मूर्तिशिल्प में दर्शाया है और उनकी अभिव्यक्ति का उद्देश्य क्या है और उनके द्वारा सृजित मूर्तिशिल्प किस प्रकार लोगों को प्रभावित कर सकती है यह भी जानने का प्रयास किया है मैंने अपने शोध पत्र में प्रदर्शनी कैटलॉग और दूसरे एकत्रित दस्तावेजों का अध्ययन कर प्रयोग किया है।

ग्रंथ सूची

1. धातुओं का इतिहास- लेखक डॉ० गोपाल शंकर उपाध्याय एवं डॉ० अविनाश चंद्र वाजपेयी
2. समकालीन- ललित कला अकादमी दिल्ली
3. समकालीन कला, संदर्भ तथा स्थिति,1980 - ललित कला अकादमी दिल्ली
4. Twentieth-century Indian Sculpture (the last two decades) Sept 2000 edition - edited by Shivaji K. Panikkar
5. Sculpture (tools, materials and techniques), 1988- author Wilbert Verhelst
6. ART India magazine, vol. 23, issue 4, quarter 4, 2020
7. ART India magazine, vol. 22, issue 1, quarter 1, 2018
8. South India Bronzes (Lalit Kala Akademi Delhi), 1981, author C. Sivaramamurti
9. Art and Deal , vol. 20, jan-feb 2024
10. Pancha-Bhutas (sound of mind) 2023, exhibition catalogue
11. https://www.gallerythreshold.com/artist/rajendar-tiku/
12. https://www.tutupattnaik.com/mywork.html